भाकृअनुप-केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपूर

कपास की खेती के लिए १५-२१ अगस्त, २०१६ साप्ताहिक सलाह

"सलाहकार संबंधित राज्यों के राज्य कृषि विश्वविद्यालयों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर किया जाता है"

साप्ताहिक सलाह

माह	४ – १० अगस्त	अगस्त, १६												ADVISORY
		वास्तविक वर्षा (मिमी)							मौसम विभाग व्दारा संभावित वर्षा (मिमी)					
दिनांक		10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	
पंजाब														उत्तरी क्षेत्र के तीन राज्यों हरियाणा , पंजाब तथा राजस्थान में फसल फलन अवस्था में है | खरपतवार निकालने के लिए अंत:सस्य क्रियाएँ की जा रही हैं | इस सप्ताह पूरे उत्तरी क्षेत्र के खेतों में सफेद मक्खी का प्रकोप नियंत्रण में है जो आर्थिक हानि स्तर से कम है| पत्ता मरोडिया रोग ग्रेड- I से ग्रेड- III के मध्य है| कुछ खेतों में जीवाणु झुलसा रोग देखा गया है | *हेलिकोवर्पा* तथा *एरियास* जाति की सुंडियों का प्रकोप देसी कपास में नाममात्र को देखा गया है | समेकित कीटनाशक प्रबंधन (आईपीएम) के आधार पर नाशीकीटों के नियंत्रण की सि फारिश की जाती है क्योंकि फसल परिपक्वावस्था में प्रवेश कर चुकी है|
भटिंडा	27.5	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
फिरोजपुर	0.7	0	3	5	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
मुकतसर	0	0	0	56	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
मानसा	17	0	0	9	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
हरियाणा														
सिरसा	9.5	0	0	1	0	2	0	0	0	0	0	0	0	
हिसार	3.6	0	1	1	4	0	0	0	0	0	0	0	5	
फ़तेहाबाद	0	0	0	0	9	0	0	0	0	0	0	0	3	
राजस्थान														
हनुमानगढ़	4.3	0	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
श्रीगंगानगर	23.7	0	1	4	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
बांसवाड़ा	201.8	35	11	2	0	0	0	0	1	1	1	6	2	

ओड़ीसा													
कोरापुट	130.5	1	3	0	2	10	9	18	18	24	0	12	48
कालाहांडी	162.1	5	19	12	0	1	0	6	70	42	7	11	39
बोलांगीर	158.4	30	8	3	0	1	0	2	98	43	10	8	29
गुजरात													
अमरेली	85	24	0	0	0	0	0	0	0	0	0	3	3
भावनगर	48.9	16	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
जामनगर	300.3	8	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
राजकोट	129.6	14	1	0	0	0	0	0	0	0	0	3	3
भरूच	51.3	7	16	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0
सबरकांठा	155.2	68	10	2	0	0	0	0	0	0	0	0	0

फसल 40 से 50 दिनों के मध्य शीर्ष वानस्पतिक तथा कलिकायन अवस्था में है | किसान मृदा में उर्वरकों की दूसरी मात्रा देने तथा पौधों को मिट्टी चढ़ाने के कार्य करने जा रहे हैं | चेंपा(एफिड), जैसिड, अर्द्धकुण्डलक इल्ली तथा ग्रासहॉ पर्स का प्रकोप दे खा गया है जो आर्थिक हानि सीमा (ईटीएल) से नीचे है | रोगों का प्रकोप दर्ज न हीं किया गया है | किसानों को सलाह दी जाती है कि खरपतवार नियंत्रण, उर्वरकों की मृदा में दूसरी मात्रा का अनुप्रयोग तथा पौधों में मिट्टी चढ़ाने के कार्यों को पूरा करें | रस चूषक कीटों की संख्या आर्थिक हानि स्तर पर पहुँचने पर इनके नियंत्रण के लिए नीमतेल @3.0मिली/ली पानी के घोल का छिड़काव करें | गूलर की सूँडी के प्रकोप की निगरानी(मॉनीटरिंग) के लिए फीरोमोन ट्रैप @5 प्रति हेक्टर की दर से फसल में स्थापित करें|

सौराष्ट्र में सिर्फ अगेती लगाई गई कपास की फसल में गूलर की गुलाबी सूँडी की क्षति रिकार्ड की गयी है | जूनागढ़ तथा कुछ दूसरे जिलों में गुलाबी सूँडी का प्रकोप आर्थिक हानि स्तर तक दर्ज किया गया है | ग्रसन का स्तर अब कम हो रहा है | अगेती बोई गई फसल में इस नाशीकीट के प्रबंधन के लिए सावधा नी रखने की आवश्यकता है जिसके लिए इस सूँडी के

सुरेन्द्रनगर	39	15	7	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	पतंगों को बड़े पैमाने पर पकड़ने के लिए फी रोमोन ट्रैप@40ट्रैप प्रति एकड़ की दर से फसल में स्थापित करें| इससे फसल की इस अवस्था में पतंगों को प्रभावी रूप में पकड़ा जा सकेगा	गुलाबी सूँडी की निगरानी के लिए 05 फी रोमोन ट्रैप प्रति हेक्टर की दर से फसल में स्थापित करें	पछेती लगाई गई फसल में गुलाबी सूँडी के प्रबंधन में सा वधानी रखें| सौराष्ट्र में सामान्य समय पर तथा पछेती लगाई गई फसल वानस्पतिक अवस्था में है	जैसिड की संख्या आर्थिक हानि स्तर(3से 4 प्रति 3 पत्तियाँ प्रति पौधा) से कम दर्ज की गई है	सफेद मक्खी की संख्या भी आर्थिक हानि सीमा से कम (01 से 02 प्रति 3 पत्तियाँ प्रति पौधा)पाई गई है	मिलीबग की संख्या आर्थिक हानि सीमा से कम(0 से I ग्रेड प्रति पौधा) दर्ज की गई| गुलाबी सूँडी का ग्रसन अगेती लगाई गई फसल में सिर्फ जूनागढ़ तथा कुछ दूसरे जिलों में दर्ज किया गया	राजकोट , बोतड़ ,भावनगर,तथा जूनागढ़ जिलों के 16 गावों में गुलाबी सूँडी का सर्वेक्षण किया गया| इनमें बॉलगार्ड II संकरों में सूँडियों की संख्या 4 से 12 के मध्य प्रति 20 पुष्प दर्ज की गई|
अहमदाबाद	79.6	19	7	2	0	0	0	0	0	0	0	0	3	
वडोदरा	95.6	29	22	1	1	0	0	0	3	19	4	5	4	
पाटन	90	14	3	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
मेहसाना	88.1	39	2	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	

मध्यप्रदेश													
खरगोन	56.6	1	4	13	3	0	0	0	0	0	0	0	0
धार	74.7	4	11	6	1	0	0	0	0	0	0	0	0
खंडवा	114.2	0	0	4	4	0	0	0	0	0	0	0	0
महाराष्ट्र													
धुले	46.2	1	3	4	2	0	0	0	0	2	1	4	3
नांदूरबार	100.5	10	25	7	2	0	0	0	0	4	3	4	5
जलगांव	41.9	1	2	3	2	0	0	0	0	0	0	0	0
अहमदनगर	15.5	1	1	1	0	0	0	0	3	12	2	2	2
औरंगाबाद	20.5	0	0	0	0	1	0	0	0	7	0	0	0

सभी कपास उत्पादक क्षेत्रों में कपास की बुआई का कार्य पूरा हो चूका है | फसल शीर्ष वानस्पतिक कलिकायन की प्रारंभिक अवस्था तथा प्रारंभिक फलन शाखायन अवस्था में है| देर से बुआई की गई फसल के क्षेत्रों में फसल 30 से 40 दिनों की है | अगेती बुआई की गई कपास के क्षेत्रों में उर्वरकों की दूसरी विखंडित मात्रा का मृदा में पति हेक्टर 38किग्रा. नत्रयुक्त उर्वरक, 20-30किग्रा. फॉसस्फोरस युक्त उर्वरक तथा 10-20 किग्रा. पोटाश की दर से अनुप्रयोग करें| जिन क्षेत्रों में कपास पछेती बोई गई है वहाँ मृदा में नत्रयुक्त उर्वरकों की पहली 38किग्रा. प्रति हेक्टर मात्रा दें| कुछ क्षेत्रों में लगातार वर्षा होने के कारण किसान खरपतवार-नियंत्रण की क्रियाएँ नहीं कर पाए हैं | लगभग सभी क्षेत्रों में रस चूषक कीट विशेषरुप से जैसिड तथा सफेद मक्खी का प्रकोप देखा गया है | किसानों को सिफारिश किए गए नियंत्रण उपाय करने की सलाह दी जाती है|

महाराष्ट्र में सामान्य रूप से कपास की फसल स्वस्थ है| अधिकांश सिंचित खेतों से अगेती बोई गई फसल में फूलों में गुलाबी सूँडी का ग्रसन कहीं-कहीं दर्ज किया गया है | इस वेब साइट पर उपलब्ध कपास स्वास्थ्य मैन्युअल के अनुसार सिफारिश किए गए

जालना	11.5	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
बीड़	6	0	1	1	0	2	0	0	0	0	0	0	0
नांदेड़	14.8	0	0	0	3	4	1	0	0	0	0	0	0
परभणी	8	0	0	0	0	3	0	0	0	0	0	0	0
हिंगोली	9.8	0	0	0	0	2	0	0	0	0	0	0	0
बुलढाना	24	0	1	13	1	4	3	0	0	0	0	0	0
अकोला	38.8	2	1	7	6	1	0	0	0	0	0	0	0
वासिम	31.4	0	0	2	0	1	0	0	0	0	0	0	0
अमरावती	48.9	2	2	4	1	3	1	0	0	0	1	3	4
यवतमाल	39	0	1	0	0	0	0	0	0	2	2	1	3
वर्धा	37.9	3	4	2	1	6	3	0	0	2	1	2	8
नागपुर	40.5	2	0	2	1	0	3	0	3	2	3	3	10
चन्द्रपुर	39.8	1	2	1	0	2	5	1	3	4	3	4	6

नियंत्रण उपायों को प्रारंभ किया जा सकता है| निराई-गुड़ाई का कार्य तेजी से चल रहा है | यदि बुआई के समय नत्र-फासस्फोरस-पोटाश उर्वरकों की आधार मात्रा दे दी गई है तो जून में बोई गई फसल में जुलाई के अंतिम सप्ताह में एक बैग यूरिया प्रति हेक्टर की दर से अनुप्रयोग करें | अगस्त तथा अगले महीनों में गुलाबी सूँडी की निगरानी के लिए फिरोमोन ट्रैप फसल में स्थापित करने की सावधानी रखें| एक साथ पुष्पन तथा गूलर निर्माण के लिए यूरिया की अधिक मात्रा , इमिडेक्लोप्रिड अथवा थायोमेथोक्जाम अथवा मोनोक्रोटोफॉस का अनुप्रयोग बिल्कुल न करें| फिलहाल राज्य के किसी भी हिस्से से नाशीकीटों अथवा रोगों के प्रकोप की रिपोर्ट नहीं है| जलमग्नता प्रभावित क्षेत्रों में मुरझान की समस्या आ सकती है| इस समस्या के प्रभावी नियंत्रण के लिए वर्षा जल की उचित निकासी क रें तथा कोबाल्ट क्लोराइड के घोल का छिड़काव प्रभावित पौधों पर करें| (पंजाब कृ. विश्वविद्यालय की सिफारिशों के अनुसार) तथा उचित फफूंदनाशी का भी इसके साथ अनुप्रयोग करें|

तेलंगाना													
आदिलाबाद	37.7	0	0	0	3	1	1	0	0	0	4	6	3
वारंगल	32.1	0	0	0	4	2	0	0	0	0	8	6	6
खम्मन	40.4	0	0	2	0	0	0	0	0	0	12	8	10
कारिंगर	39.8	0	0	0	8	3	0	0	0	0	5	8	6
नालगोंडा	3.8	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
महबूबनगर	5.6	0	0	0	3	3	0	0	0	0	0	0	0
आंध्रप्रदेश													
गुन्टूर	2.8	0	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
प्रकासम	1.4	0	0	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0

राज्य के किसी भी हिस्से से नाशीकीट अथवा रोगों के प्रकोप की रिपोर्ट प्राप्त नही हुई हैं | कहीं भी कीटनाशकों के प्रयोग की आवश्यकता नहीं है|

फसल 60 दिनों की पौध अवस्था में है | अगेती बोई गई फसल में नत्र तथा पोटाश उर्वरकों की पहली विखण्डित मात्रा दी जा सकती है | खरपतवारों के नियंत्रण तथा नमी संरक्षण के लिए अंत:सस्य क्रियाएँ की जा रही हैं| प्रारंभ में दिखाई देने वाले रस चूषक कीटों का प्रकोप रिपोर्ट नहीं किया गया है | फूलकीट (थ्रिप्स) का प्रकोप देखा गया है जो आर्थिक हानि स्तर से कम है | अगेती बोई गई (जून) फसल में किए गए निदान सर्वेक्षण में गूलर की गुलाबी सूँडी की उपस्थिति दर्ज की गई है | अंत: फीरोमोन ट्रैप से मानीटरिंग करें तथा नियमित रूप से खेतों में निगरानी करते रहें| सूखा जैसी परिस्थिति बनी रहने के कारण बीटी संकरों में विभिन्न तीव्रता का शारीरिक कारणों से लाल-पत्ती रोग दर्ज किया गया है| फसल की आयु के अनुसार पौधों के पुन: सामान्य अवस्था में उबरने तक 5-7 दिनों के अंतराल पर 1-

														2% यूरिया+1.0% मैग्नीशियम सल्फेट अथवा 1-2% पोटेशियम नाइट्रेट (मल्टी-पोटाश)+ 1.0% मेग्नीशियम सल्फेट अथवा 1-2% डीएपी+1.0%मेग्नेशियम सल्फेट का फसल पर छिड़काव करें|
कर्नाटक														कपास की फसल लगभग 50 से 70 दिनों की पुष्पन अवस्था में है| बेलागवी तथा धारवाड़ जिलों के कुछ हिस्सों में तीव्र ग ति की हवाओं के साथ भारी वर्षा रिकार्ड की गई	रस चूषक कीटों के लिए फसल संरक्षण उपाय किए गए| प्रात:कालीन वेला में प्ररोह-घुन को हाथ से चुनने का कार्य चल रहा है| लागातार वर्षा होते रहने से हाथ से नीराई करने अथवा अंत:सस्य क्रियाएँ करना संभव न होने के कारण खरपतवारों का भारी प्रकोप कुछ क्षेत्रों में देखा गया है| क्वीजालोफोप इथाइल तथा पायरीथायो बेक-सोडियम का 1.0मिली/ली पानी की दर से अंकुरण-पश्चात खरपतवारनाशक अनुप्रयोग की सिफारिश एक बीजपत्री तथा द्विबीजपत्री दोनों प्रकार के खरपतवारों के नियंत्रण के लिए की जाती है| हवेरी, बेलगाम तथा धारवाड़ जिलों के अधिकांश कपास उत्पादन क्षेत्रों में रस चूषक कीटों तथा प्ररोह घुन का प्रकोप बना हुआ है| नाशीकीटों के प्रभावी नियंत्रण के लिए किसानों को सलाह दी जाती है कि कपास मैन्युअल का अनुकरण
धारवाड़	32.7	0	5	2	6	5	1	1	3	2	3	1	2	
हवेरी	24.4	1	0	1	2	2	1	1	3	2	2	1	2	
मैसूर	2	1	1	0	4	2	4	3	3	6	5	3	3	

														करें| रोगों का प्रकोप नहीं है| रायचूर में फसल 35 से 40 दिनों की है| बारानी क्षेत्रों में फसल की वृद्धि तथा हालत अच्छी है| कुछ क्षेत्रों में खरपतवारों का प्रकोप देखा गया है	कुछ क्षेत्रों में फूलकीट(थ्रिप्स) तथा जैसिड का प्रकोप देखा गया है	रोगों का प्रकोप नहीं है|
तामिलनाडु														कपास की बुआई का कार्य चल रहा है	बोई गई फसल सामान्य तथा वानस्पतिक अवस्था में है	नाशीकीटों तथा रोगों का कोई प्रकोप नहीं है|
पेरंबलुर	0	0	0	0	1	0	0	0	0	0	0	0	0	
सलेम	1	1	0	0	7	3	0	2	0	0	0	0	0	
त्रिची	0.1	0	0	0	0	5	0	0	0	0	1	1	0	
विरडुनगर	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	

आदर्श वर्षा					
वर्षा मि.मी.	<5	5-20	21-50	50-80	>80

साप्ताहिक सलाहकार संयोजक टीम:

डा. के.आर. क्रांति, डा. ए. एच. प्रकाश, डा. संध्या क्रांति, डा. डी. मोंगा, डा. ब्लेज़ डी-सूजा, डा. एस. बी. सिंह, डा. सिंगनधूपे, डा.एम.वी. वेणुगोपालन, डा. इसाबेला अग्रवाल, डा. एम.सबेस, डा. विश्लेष नगरारे, डा. ऋषि कुमार, डा. एन अनुराधा नराला, डा. दीपक नगराले, श्रीमति संगीता औरंगाबादकर एवं कु. सचिता एलेकर

हिन्दी संसकरण: **डॉ. उल्हास नंदनकर,** मुख्य तकनीकी अधिकारी एवं प्रभारी, हिन्दी अनुभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)